मीडिया प्रबंधन

समय पर एवं सही सूचना द्वारा जान एवं माल, की क्षति को रोका/न्यूनतम किया जा सकता है, वहीं दूसरी ओर गलत या असमय सूचना द्वारा समुदाय में अफवाह एवं भ्रम की स्थिति सृजित हो सकती है। *समाज के विकास के लिए आवश्यक सकारात्मक पहलुओं के बेहतर प्रस्तुतीकरण हेतु मीडिया का अनुकूलतम उपयोग ही ''मीडिया प्रबंधन'' है।*

परंतु यह भी विभिन्न स्थिति परिस्थिति पर निर्भर करता है, कि सूचना प्रसारण का स्तर क्या हो। उदाहरणार्थ यदि किसी आपदा की केवल संभावना हो अथवा सूचना देने से लोगों में घबराहट फैलने का डर हो तब आवश्यक होगा कि केवल मुख्य शासकीय विभाग, प्राधिकारी, अधिकारी एवं प्रमुख संस्थाओं को सूचना दी जाए। जनता को सुनियोजित एवं चरणबद्ध तरीके से सूचना दी जाए। ऐसे में ''स्थिति पर नजर रखें'' या ''सचेत रहें'' या ''परामर्श दें'' . . . .आदि की स्थिति हो सकती है।

जब सूचना तुरंत/समुदाय तक पहुंचाना आवश्यक हो तो इलेक्ट्रॉनिक मीडिया जैसे रेडियों, टेलीविजन, केबल टीबी, टेलीफोन एवं इंटरनेट का उपयोग किया जायेगा।

रेडिया प्रसारण– साधारण तौर पर रेडियो में आपदा पूर्व तैयारी एवं शमन के संबंध में आवश्यकतानुसार प्रतिदिन एक दिन के अन्तराल से अथवा सप्ताह में एक बार कार्यक्रम प्रस्तुत किए जा सकते हैं। परंतु आपातकाल एवं आपदा के समय यह अति आवश्यक होगा कि प्रति घण्टा रेडियो पर जनहित में सूचनाएं एवं विशिष्ट कार्यक्रम प्रसारित हों; हालांकि यह आवश्यक है कि विषय विशेषज्ञों के सानिध्य में ही ऐसे कार्यक्रम प्रसारित होना चाहिए।

टेलीविजन प्रसारण

रेडियों के लिए दिए गए सुझाव यहां भी लागू होंगे एवं उसके अतिरिक्त आपात स्थिति में या जल्दी सूचना देने की स्थिति में, चल रहे कार्यक्रम के नीचे एक पट्टी में लिखित सूचना दी जा सकती है। टेलीविजन पर ग्राफिक्स तत्व जैसे राडार एवं सेटेलाइट चित्र, मौसम की जानकारी, नक्शे, बाढ़ के जी0आई0एस0 नक्शे आदि ज्वलंत रूप से चित्रित एवं प्रदर्शित किए जा सकते हैं। टेलीविजन पर आपदा स्थिति में कार्य कर रहे विषय विशेषज्ञों जैसे मटीरियोलॉजिस्टों, हाइड्रोलॉजिस्टों आदि का वर्तमान स्थिति के बारे में साक्षात्कार कर जानकारी एवं परामर्श लेना बहुत लाभकारी होता है। टेलीविजन एवं अन्य इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में सूचना प्रसारण एवं परामर्श बहुत ही सावधानी एवं उपयुक्त चयनित शब्दों में देना चाहिए।

इंटरनेट

आधुनिक टेलीकम्युनिकेशन जैसे इंटरनेट से मोबाईल में एस0एम0एस0 संदेश एवं सूचना देने आदि को भी अब मीडिया में शामिल करना आवश्यक हो गया है। इंटरनेट के द्वारा हम दुनिया के किसी भी दूसरे कोने में बैठे विषय विशेषज्ञों और अनुभवी जनों का मार्गदर्शन एवं परामर्श प्राप्त कर सकते हैं। विभिन्न संस्थाओं से कोष या सहायता की मांग कर सकते हैं।

समाचार पत्र

समाचार पत्रों का मध्य प्रदेश के संदर्भ में विशेष महत्व है, क्योंकि अभी तक गांवो में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से अधिक समाचार पत्रों का प्रभुत्व बना हुआ है। समाचार पत्रों की आपदा प्रबंधन के संदर्भ में बहुत महत्वपूर्ण एवं सकारात्मक भूमिका हो सकती है। पूर्व तैयारी, अनुक्रिया एवं शमन संबंधी शासकीय एवं विभिन्न इकाइयों द्वारा निर्मित योजनाओं का विश्लेषण एवं प्रकाशन कर लोगों को जागरूक किया जा सकता है। किस प्रकार की आपदा में क्या करना चाहिए, के संर्दभ में लोगों को जागरूक किया

जा सकता है। किन्तु आपदा काल में लोगों को घटना संबंधी सूचना, चेतावनी देने में भी समाचार पत्रों की आज भी प्रदेश में अहम् भूमिका है। समाचार पत्रों में घटना की ग्राफिक्स चित्रों द्वारा एवं गहन विश्लेषण द्वारा, और अधिक विस्तृत रूप में जानकारी दी जा सकती है।

जिला प्रशासन एवं मीडिया प्रबंधन

- सामान्यतः किसी भी जिले में मीडिया प्रबंधन की जिम्मेदारी जिला सूचना अधिकारी की होती है। सामान्य स्थिति में आपदा पूर्व तैयारी, शमन तथा अनुक्रिया हेतु गठित दलों एवं सामान्य कार्य जिला सूचना अधिकारी द्वारा किये जायेंगे।
- जिला मन्दसौर में किसी भी आपदा या आपदा संभावित स्थिति में जिले स्तर पर एक अनुभवी एवं सक्षम प्रशासनिक अधिकारी ही मीडिया प्रबंधन संबंधी कार्यों हेतु अधिकृत होगा।
- अफवाहों एवं अनावश्यक परेशानियों सें बचने के लिए संबंधित अधिकारियों द्वारा आपात स्थिति में किये गये कार्यों तथा अन्य संभावित कार्यों के विषय में आवश्यकतानुसार एवं समय–समय पर प्रेस नोट/बुलेटिन/संक्षेपिका (जिला आपदा प्रबंधन कक्ष द्वारा) मीडिया प्रतिनिधियों को जारी किया जायेगा।
- अव्यवस्था से बचने के लिए घटना स्थल पर केवल अधिकृत व्यक्तियों/मीडिया के लोगों को जाने की छूट होगी।

आपदा के पहले मीडिया की भूमिका

- जिले में विद्यमान जोखिमों उनके स्त्रोतों का विश्लेषण एवं उनका प्रस्तुतीकरण।

- उन तत्वों का पता लगाना एवं प्रस्तुतीकरण करना, जो कि समुदायों की, आपदा के प्रति संवदेनशीलता को बढ़ाते है।
- जन सामान्य को जिले में विद्यमान जोखिमों से अवगत कराना, एवं उनके बारे में संपूर्ण जानकारी विस्तार से देना।
- ''पूर्व सूचना तंत्र'' के विषय में पहले से लोगों को जानकारी प्रदान करना।
- जिले के विभिन्न विभागों एवं इकाइयों द्वारा तैयार की गई पूर्व तैयारी संबंधित रणनीति के बारे में समुदाय को विस्तार से जानकारी प्रदान करना।
- संभावित जोखिमों को कम करने हेतु नीति निर्माणकर्ता/अधिकारियों को बार–बार जानकारी प्रदत्त करना एवं उसके विषय में स्थानीय जनसमुदाय को भी जानकारी देकर जागरूक एवं गतिशील करना।
- आपदा प्रबंधन के लिए लोगों की भागीदारी को प्रोत्साहित किया जायेगा तथा इस संबंध में किये जा रहे प्रयासों तथा समुदाय की भूमिका के विषय में आयोजित किये जा रहे कार्यक्रमों/गतिविधियों को उचित तरीके से प्रकाशित करना।

आपदा के समय मीडिया की भूमिका

- जनता को समय पर एवं तथ्यसंगत सूचना प्रदान करना।
- आपदा सम्बंधी विभिन्न ''क्रियाकलापों'' के संबंध में लोगों को समय पर, सही सूचना प्रदान करना।
- समुदाय को विभिन्न ऐजेंसियों, सहायता प्रदान करने वाली संस्थाओं द्वारा दी जाने वाली सहायताओं, सरकारी एवं गैर सरकारी विभागों द्वारा किए जाने वाले राहत कार्यों की जानकारी देना।
- सर्वाधिक प्रभावित अथवा फंसे लोगों के विषय में प्रशासन तक संदेश पहुंचाना।

- प्रभावित लोगों एवं उनके रिश्तेदारों दोस्तों व परिवारों के बीच संचार व्यवस्था हेतु सुविधाएं प्रदान करना।
- प्रभावित एवं बचे हुए लोगों की आवश्यकताओं को उच्च महत्व देते हुए, उनसे राहत कार्य में लगे सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं को अवगत कराना।
- संभावित द्वितीयक जोखिमों (उदाहरणार्थ बाढ़ के पश्चात् महामारी का डर) के विषय में सूचना एवं जागरूक करना ताकि आगे आने वाली आपदा एवं हानि से बचा जा सके।
- जिला प्रशासन द्वारा किए गए व्यवस्थाओं, शिविरों आदि राहत कार्यों की सूचना प्रभावित जन समुदाय को उपलब्ध कराना।
- जिला प्रशासन द्वारा स्थापित राहत कार्यों पर नजर रखना एवं लोगों को उसके बारे में समय–समय पर सूचना प्रेषित करना।

आपदा के पश्चात् मीडिया की भूमिका

- समुदाय को पुर्नवास संबंधी, शासन एवं अन्य संस्थाओं द्वारा किए जाने वाले क्रियाकलापों संबंधी सूचनाएं प्रदान करना।
- जन हानि, धन हानि, पशुधन हानि आदि के संबंध में अनुमान लगाने, विश्लेषण करने आदि में समुदाय को आवश्यक सहयोग प्रदान करना।
- आपदा पश्चात् स्वास्थ्य केन्द्रों एवं स्वास्थ्य संबंधी प्रक्रियाओं, केन्द्रों फोन नंबर के विषय में समुदाय को जानकारी देना।
- आपदा से सहमें, एवं सदमें में आये हुए लोगों को पूर्व स्थिति में आने हेतु मनोवैज्ञानिकों एवं अन्य विशेषज्ञों के परामर्श एवं साक्षात्कार द्वारा ''काउंसिलिंग'' एवं सलाह उपलब्ध करवाना।

- प्रभावित एवं लाचार लोगों (विशेषकर बच्चे वृद्धजन, विकलांग, महिलाएं बीमार एवं इत्यादि) की ओर प्रशासन एवं अन्य संस्थाओं का ध्यान आकर्षित करवाना एवं उनके लिए उचित पुर्नलाभ व्यवस्था उपलब्ध करवाने हेतु आवश्यक प्रयास करना।
- पुर्नवास एवं पुर्नव्यवसाय संबंधी शासकीय एवं गैर शासकीय प्रक्रियाओं एवं कार्यों के बारे में प्रभावितों को सूचना उपलब्ध करवाना।

इस प्रकार मीडिया की पूर्व तैयारी, अनुक्रिया एवं शमन कार्य के चरणों में सामुदायिक जागरूकता एवं सूचना प्रसारण में बहुत ही महत्वपूर्ण एवं सकारात्मक भूमिका है। मीडिया का उपयोग आपदा प्रबन्धन के प्रत्येक चरण में किया जा सकता है। इस माध्यम से जन सामान्य को जिले की आपदा संबंधी पूर्व तैयारी के विषय में जानकारी प्रदान की जा सकती है। विभिन्न आपदाओं के समय क्या करें/क्या न करे के विषय में लोगों को जानकारी प्रदान की जा सकती है, साथ ही आपदा से जुड़े विभिन्न पहलुओं, कानूनों, नियमों इत्यादि के विषय में लोगों को जागरूक एवं गतिशील किया जायेगा।

किसी भी आपात स्थिति में अथवा चिन्हित विभिन्न खतरों के विषय में जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा स्थानीय मीडिया एवं संशाधनों का उपयोग जिले में चिन्हित खतरों से सम्बंधित पूर्व तैयारी, निवारण, शमन एवं अनुक्रिया हेतु किया जायेगा।